❑गद्य-काव्य

नुकती-दाणा

गोविंद अग्रवाल

कवि परिचै

गोविंद अग्रवाल राजस्थानी भासा री मुडिया लिपि रा देस रा नामी जाणकार हा। आपरौ जलम 17 अगस्त, 1922 नै होयौ। इतिहास, साहित्य अर लोक-संस्कृति विसय रा शोधकार्यां में आप देस-विदेस रा केई शोधार्थियां रौ मारग-दरसण करयौ। हिंदी अर राजस्थानी में लगोलग अर समरूप सिरजण करयौ। सन् 1960 सूं 1965 तांई उणां इतिहास रा स्रोता, घटनावां, लोकगाथा, लोकगीतां अर लोकगाथा आद माथै 1500 पानां री प्रामाणिक अर तथ्यपरक सामग्री संकलित-संपादित करनै राजस्थानी सारू लूंठौ काम करयौ। आपरौ औ कारज राजस्थानी री लूंठी हेमाणी है। आपरी चावी-ठावी रचनावां में 'राजस्थानी लोककथावां', 'राजस्थानी कहावत कोश', 'राजस्थानी लोककथा कोश' (दो भाग) अर गद्यकाव्य री रचना 'नुकती-दाणा' प्रमुख है। श्री अग्रवाल राजस्थानी अर हिंदी री 21 पोथ्यां लिखी, जिणमें इतिहास अर लोक-साहित्य रौ वरणन, शोधपरक अर सरावणजोग है। 350 रै लगैटगै वांरा शोधपत्र देस री ख्यातनांव पत्र-पत्रिकावां में छप्या। वै चूरू में 'नगरश्री' लोक-साहित्य संस्थान री थापना करी अर इण संस्थान सूं 'मरुश्री' नांव सूं 1971 सूं 1987 तांई शोध-पत्रिका ई निकाळी, जिणरा केईक विसेसांक शोधार्थियां सारू घणा महताऊ अर संग्रैजोग है।

पाठ परिचै

आधुनिक काल रै गद्य-साहित्य री विधावां में गद्य-काव्य घणी वाल्ही विधा है, जिणमें भाव पद्य रौ अर भासा गद्य री आवै। गद्य अर पद्य रौ सरीर अर आतमा जैड़ौ मेळ है। राजस्थानी में गद्य-काव्य लिखणियां में डॉ. मनोहर शर्मा, ठा. रामसिंह, चन्द्रसिंह बिरकाळी, गोविंद अग्रवाल, कन्हैयालाल सेठिया अर नूंवा लिखारा में विक्रमसिंह चौहान खास है। गोविंद अग्रवाल री पोथी 'नुकती-दाणा' सूं कीं टाळवीं गद्य-कवितावां अठै लिरीजी है। नीति, दरसण अर वैवार रौ बोध कम सूं कम सबदां में घणै असरदार ढंग सूं होवै। घमंड अर सरलता, अमीरी अर गरीबी रौ भेद अर मिनख री दीठ में माया रै असर रौ बारीक चित्रण आं रचनावां में होयौ है।

नुकती-दाणा

(1) माटी को दीवौ चिनो'क सो उजास देयनै भी आपकै काजळ सूं आपकी बिड़दावळी भींत ऊपर मांडै, पण आखै जगत में परगास देवणियौ सूरज कदै इसी बात मन में ई को ल्यावै नीं।

(2)मालदारां का पग तौ माया कै नसै सूं धरती पर टिकै कोनी अर गरीब कै दो पगां नैं कठैई ठौड़ कोनी, जद पछै आ धरती क्यां जोगी है?

(3)पाणी सूं भर्‌योड़ै कुंडै में टिकाणै सूं सीधी अर निरजीव लकड़ी भी बांकी लखावै जणा माया सूं भर्‌योड़ै बखारां कै बिचाळै रैवणिया मिनख सीधा कियां रैवै?

गळगचिया

कन्हैयालाल सेठिया

कवि परिचै

कवि कन्हैयालाल सेठिया रौ जलम सन् 1919 में चूरू जिलै रै सुजानगढ कस्बै में होयौ। आपरी भणाई-लिखाई घरां ई होयी। 'धरती धोरां री' अर 'पाथळ अर पीथळ' जैड़ी लोकप्रिय रचनावां रा सिरजणहार स्व. सेठिया री राजस्थानी अर हिंदी में पचास सूं बेसी काव्य-पोथ्यां छप्योड़ी। जनकवि रै रूप में सुविख्यात कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भासा राजस्थानी रा साचा पुजारी, टकसाळी भासा रा जाणकार हा। वां मोकळी आध्यात्मिक अर दार्शनिक कवितावां ई लिखी। भारतीय समाज अर लोकमानस नैं आपरी लेखनी रौ विसै बणावण वाळा स्व. सेठिया आधुनिक काळ रा मौलिक अर मौजीज कवि मानीजै। राजस्थानी में आपरी 13 काव्य-कृतियां छप्योड़ी है, जिणां में रमणिया रा सोरठा, मींझर, कूंकूं, गळगचिया, लीलटांस, धर कूचां धर मजलां, मायड़ रौ हेलो, सबद, सतवाणी, अघोरी काळ, दीठ, कक्को कोड रो अर लीक-लकोळ्या खास है।

आधुनिक राजस्थानी कविता में सेठिया जी अेक न्यारी-निकेवळी पिछाण राखै। अेक संतअर दारसनिक सरीखौ गैरौ चिंतन, सबदां री बारीक कारीगरी, मीठी रसभरी अभिव्यक्ति आपरै काव्य री विसेसतावां है। मिनखापणै री मरजादा, चरित्र रौ ऊजळौ पख, देस अर समाज रै सुधार री हूंस, प्रकृति अर राजस्थानी भासा री पीड़ आपरै काव्य में सांगोपांग ढंग सूं प्रगट होवै।

पाठ परिचै

कन्हैयालाल सेठिया री गद्य-काव्य पोथी 'गळगचिया' मांय सूं कीं टाळवीं गद्य-कवितावां इण पाठ में लिरीजी है। अै कवितावां मिनख-मानखै री सावळ ओळखाण करावै। तांबै अर माटी रै घड़ै रौ दाखलौ प्रेम, ग्यान अर अपणायत रौ घणौ झीणौ अरथ प्रगट करै। कोयल अर काग रै मीठा अर खारा बोलां रौ आपरौ असर है। जेवड़ी मिनख री कुबुद्धि अर गैलपणै नैं चौड़ै करै, तौ घड़ौ परिपक्वता मांगै। नीमड़ौ अर मतीरै री बेल लुळणौ अर धरातळ सूं जुड़नै आगै बधण री साख भरै, तौ पानड़ै जैड़ा मिनख मूळ सूं टूटनै आगै बधै जरूर है पण क्यां जोगा ई नीं रैवै। मूळ सूं जुड़ाव जरूरी है। इण गद्यकाव्य री भासा आलंकारिक अर भाव गागर में सागर ज्यूं है।

गळगचिया

(1) तांबै रौ कळसौ माटी रै घड़ै नैं कैयौ, ''घड़ा, थारै में घाल्योड़ौ पाणी ठंडौ कियां रैवै अर म्हारै में घाल्योड़ौ तातौ कियां हो ज्यावै ?'' घड़ौ बोल्यौ, ''म्हैं पाणी नैं म्हारै जीव में जग्यां द्यूं हूं अर तूं आंतरै राखै, औ ही कारण है।

(2) रूंख रै पत्तां में लुक्योड़ी कोयलड़ी बोली, ''कूहूऽऽ'' मारग बैंवता बटाऊ निजर उठायनै बोल्या, ''आ कठैक बोली ?'' रूंख री ऊंचली टोखी पर बैठ्यौ कागलौ बोल्यौ, ''कुरांऽ कुरांऽऽ'' पण कोई आंख उठायनै ई नीं देख्यौ।

(3) मिनख कैयौ, ''उळझ्योड़ी जेवड़ी, म्हैं तनैं सुळझायनै कित्तौ उपगार करूं हूं।'' जेवड़ी बोली, ''तूं किस्योक उपगारी है जकौ म्हारै सूं छानौ कोनी। कोई और नैं उळझाणै खातर ई मन्नै सुळझातौ होसी।''

(4) कुम्हार काचै घड़ै नैं चाक सूं उतारनै न्यावड़ै री उकळती भोभर में ल्या न्हाख्यौ। घड़ौ रोयनै बोल्यौ, ''विधाता, आ कांई करी?'' कुम्हार हंसनै कैयौ, ''पणिहारी रै सिर परां इयां सीधौ ही चढणौ चावै हौ के?''

(5) नीमड़ै रौ रूंख मतीरै री बेल नैं हंसनै कैयौ, ''म्हारी टोखी तौ आभै नैं नावड़ै है अर तूं धूळ पर ही पसरयोड़ी पड़ी है?'' मतीरै री बेल बोली, ''पैली थारै फळ कानी देख, पछै म्हारै सूं बात करजै।''

(6) पानड़ौ झरनै पाणी में पड़ग्यौ, डूब्यौ कोनी, तिरण लागग्यौ। मन में फुलीजनै रूंख नैं कैयौ, ''म्हैं किस्योक हुंस्यार तिराक हूं?'' सिंझ्या पड़तां ई रूंख कैयौ, ''पानड़ा, अेकर अठीनै आईजै।'' पण पानड़ौ रोवतौ सो बोल्यौ, ''म्हारै सारै री बात कोनी।''

(7) पान पीळा पड़ता देखनै माळी रौ चैरौ पीळौ पड़ग्यौ, पण फळ पीळा पड़ता देखनै माळी रै मूंडै पर ललाई आयगी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दीवौ=दीपक, दिवलौ। उजास=प्रकास, उजाळौ। बिड़दावळी=जस रौ गीत। चिनोक=थोड़ोक, छोटोक। मालदार=धनी, अमीर। बांकी=टेढी। कळसौ=तांबै रौ छोटौ मटकौ। तातौ=गरम। आंतरै=दूर। रूंख=पेड़। बटाऊ=राहगीर, पंथी। टोखी=ऊंची डाळी। जेवड़ी=रस्सी। चाक=जिण माथै गीली माटी नैं कुंभार आकार देवै। भोभर=जगता खीरा रै ऊपरली गरम राख। ललाई=लालिमा, चैंरै रौ चिळकास। फूलीजनै=गरब सूं, घमंड सूं।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाठ में आयौ गद्य-काव्य गोविंद अग्रवाल रै किण संग्रै सूं संकलित है?

   (अ) राजस्थानी लोककथावां (ब) सीपी

   (स) वंदनमाळ (द) नुकती-दाणा

   ( )

2. कन्हैयालाल सेठिया री किण पोथी सूं गद्य-काव्य रा अंस लिरीज्या है?

   (अ) लीलटांस (ब) मींझर

   (स) गळगचिया (द) अघोरी काळ

   ( )

3. माटी रौ दीयौ आपरै काजळ सूं भींत माथै कांई मांडै?

   (अ) चित्राम (ब) बिड़दावळी

   (स) मांडणा (द) साखियौ

   ( )

4. मिनख जेवड़ी नैं क्यूं सुळझावै?

   (अ) दूजै नैं उळझावण सारू (ब) गाय बांधण सारू

   (स) मांचै री देवण सारू (द) चारै रौ भारौ बांधण सारू

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माळी रौ चैरौ पीळौ क्यूं पड़ै ?
2. कुम्हार काचै घड़ै नैं चाक सूं उतारनै कठै न्हाख्यौ ?
3. किण रै पगां नैं धरती माथै ठौड़ नीं मिळै ?
4. घड़ै में पाणी ठंडौ रैवण रौ कांई कारण बताईज्यौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाणी रै कुंड में पड़ी लकड़ी किणरै प्रभाव रै कारण टेढी लखावै ?
2. माटी रौ दीयौ अर सूरज समाज में कैड़ा मिनखां रा प्रतीक है ?
3. कोयल अर काग रै बहानै रचनाकार कांई बात कैवै ?
4. गोविंद अग्रवाल कुणसी संस्था री थापना करी अर बठै सूं किसी शोध-पत्रिका निकाळी ?
5. कवि कन्हैयाला सेठिया री चार पोथ्यां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''कन्हैयालाल सेठिया री पोथी 'गळगचिया' री गद्य कवितावां मिनख खातर मोटी सीख है।'' इण कथन नैं सिद्ध करौ।
2. तांबै रै कळसै अर माटी रै घड़ै बाबत सेठियाजी रा विचार लिखौ।
3. गोविंद अग्रवाल रै गद्य-काव्य में आयोड़ा मूळ भावां नैं लिखौ।
4. कन्हैयालाल सेठिया रै गद्य-काव्य री मूळ भावना समझावौ।

नीचै दिरीज्या गद्यकाव्य अंसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. माटी को दीवौ चिनो'क सो उजास देयनै भी आपकै काजळ सूं आपकी बिड़दावळी भींत ऊपर मांडै, पण आखै जगत में परगास देवणियौ सूरज कदै इसी बात मन में ई को ल्यावै नीं।

2. पाणी सूं भर्‌योड़ै कुंडै में टिकाणै सूं सीधी अर निरजीव लकड़ी भी बांकी लखावै जणा माया सूं भर्‌योड़ै बखारां कै बिचाळै रैवणिया मिनख सीधा कियां रैवै ?

3. मिनख कैयौ, ''उळझ्योड़ी जेवड़ी, म्हैं तनैं सुळझायनै कित्तौ उपगार करूं हूं।'' जेवड़ी बोली, ''तूं किस्योक उपगारी है जकौ म्हारै सूं छानौ कोनी। कोई और नैं उळझाणै खातर ई मन्नै सुळझातौ होसी।''

4. नीमड़ै रौ रूंख मतीरै री बेल नैं हंसनै कैयौ, ''म्हारी टोखी तौ आभै नैं नावड़ै है अर तूं धूळ पर ही पसर्‌योड़ी पड़ी है ?'' मतीरै री बेल बोली, ''पैली थारै फळ कानी देख, पछै म्हारै सूं बात करजै।''